STD. VIII HINDI LIT.(कौरव नगरी भाग --4)

प्रश्न उत्तर :----

प्रश्न 1. जीवन के सूने गलियारे से क्या तात्पर्य हैं? उत्तर :--यहाँ सूने गलियारे के दो अर्थ हैं-युद्घ से पहले वह गलियारा कौरव वधुओं के कारण रोशन रहता था, लेकिन युद्घ के दौरान आज वह गलियारा सूना पड़ा है, क्योंकि कौरव कुमार युद्ध भूमि में मृत पड़े हैं और उनकी वधुएँ आज विधवा हैं ।जीवन के सूने गलियारे से तात्पर्य यह भी है कि जब हम अनैतिक, ग़लत चीज़ें ,छल- प्रपंच को देखते हुए भी चुप रहते हैं।जब सिंहासन पर बैठे लोग ही प्रपंच के कारण प्रजा को युद्घ की अग्नि में झोंक रहे हों तो उस राज्य का भविष्य क्या होगा ?इसलिए प्रहरियों को अपना जीवन सूना लगने लगता है ।

प्रश्न 2.अंधे राजा की प्रजा कहाँ तक देखे-- आशय स्पष्ट करें ।

उत्तर :---राजा अपनी प्रजा का ,कुल का नायक होता है ,मार्गदर्शक होता है और राजा जिस रास्ते पर चलता है प्रजा भी उसी रास्ते पर चलती है ।पर जब राजा अंधे हो, सिर्फ नेत्रों से ही से ही नहीं ,बल्कि अपनी सोच और विचार से भी अंधे हो,पुत्र मोह में अंधे हो ,स्वार्थ में अंधे हो तो ऐसे राजा की प्रजा भी भ्रष्टाचार व क्रूरता में लीन हो जाती है ।इसलिए कहा गया है जब राजा ही अपनी राज्य का विनाश नहीं देख पा रहे हो तो क्या प्रजा उस विनाश को देख पाएगी?

प्रश्न 3. गिद्धों का कुरुक्षेत्र की दिशा में मुड़ना-- किस बात का संकेत है?

उत्तर :--जहाँ मृत शरीर होता है ,वहीं गिद्ध देखे जाते हैं ।गिद्ध ऐसे प्राणी होते हैं जो मृत शरीर से अपनी क्षुधा शांत करते हैं ।जब करोड़ों की संख्या में गिद्ध कुरुक्षेत्र की ओर मुड़ जाते हैं तो यह इस बात का संकेत है कि युद्ध भूमि हज़ारों मृत सेनानियों के शरीर से पटी पड़ी हैं, तभी करोड़ों की संख्या में गिद्ध कुरुक्षेत्र की ओर मुड़ गए हैं।